LEIBNITZ - THEORY OF PRE-ESTABLISHED HARMONY

लाइबनितज़ -पूर्व-स्थापित सामंजस्य का सिद्धान्त

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan
(For Part- 1 Hons. Students)

लाइबनितज़ ने जिस बहुतत्वाद की स्थापना कीउसमें उन्होंने असंख्य द्रव्य की कल्पना भी की और उन्होंने प्रत्येक द्रव्य अर्थात चिदणु को छिद्र रहित और स्वतन्त्र माना है।ये एक दूसरे को प्रभावित नहीं कर पाते, फिर भी इनमें आन्तरिक सम्बन्ध रहता है।इनसे बने विश्व में एक अदभुत सामंजस्य एवम व्यवस्था का दर्शन होता है।अब प्रश्न यह उठता है कि यदि चिदणु स्वतन्त्र हैं तब इस विश्व में व्यवस्था और सामंजस्य किस प्रकार सम्भव है साथ ही साथ आत्मा और शरीर में सम्बन्ध कैसे स्थापित हो पाता है ?इस समस्या को सुलझाने हेतु लाइबनितज़ ने पूर्व-स्थापित सामंजस्य(Pre - established harmony)के सिद्धांत का प्रतिपादन किया है।यह सिद्धान्त लाइबनितज़ के दार्शनिक नियमों में प्रमुख है और दार्शनिक जगत को लाइबनितज़ का प्रमुख देन कहा गया है।

लाइबनितज़ के अनुसार असंख्य चिदणु में से एक परमचिदणु या सर्वश्रेष्ठ चिदणु है जिसे उन्होंने ईश्वर की संज्ञा दी है। उस ईश्वर ने अन्य चिदणुओं की सृष्टि की है। उन्होंने सभी चिदणुओं को स्वतंत्र बनाकर एक सूत्र में बांध दिया है। फिर भी उनकी स्वतंत्रता में कभी विरोधाभास नहीं होता विश्व की व्यवस्था एकता तथा सामंजस्यता का कारण ईश्वर है। ईश्वर ने ही सृष्टि से पूर्व सामंजस्य स्थापित कर दिया है। जैसा कि लाइबनितज़ ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि चिदणु की सृष्टि के समय ईश्वर ने ऐसी व्यवस्था निश्चित कर दी की चिदणु में समान परिवर्तन हो तथा एक ही क्रिया के समान दूसरे में प्रतिक्रिया उत्पन्न हो ।ईश्वर चुकी सर्वज्ञाता ,सर्वशक्तिमान है तथा उसी ने सारी चिदबिंदुओं का निर्माण किया है, अतः इन चिदबिंदुओं के निर्माण से पूर्व ही वह इस बात से भिज्ञ था कि ये चिदबिंदु छिद्ररहित तथा स्वतंत्र होंगे। इसलिए ईश्वर ने इसकी रचना के पूर्व ही ऐसे नियम की रचना कर दी जिससे इन असंख्य चिदबिंदुओं के बीच सामंजस्य बना रहे।

इन चिदबिन्दुओं के बीच की सामंजस्यता को समझाने के लिये लाइबनितज़ ने दो उदाहरणों का सहारा लिया है।

पहला उदाहरण विविध वाद्य यंत्रों का एकता संगीत है यहां प्रत्येक वाद्ययंत्र अपना स्वतंत्र स्ववैशिष्ट्य कायम रखते हुए अन्य वाद्य यंत्रों के स्वरों से संगति रखता है और एकतासंगीत की सृष्टि होती है। सभी वाद्ययंत्रों का एक ही लक्ष्य है एकतासंगीत की सृष्टि। इसी प्रकार चिदणु चेतना के विभिन्न स्तरों पर क्रियाशील होते हुए भी आपस में सामंजस्य

बनाए रखते हैं। चिदणु के अस्तित्व कि पृथकता में लक्ष्य की एकतंत्रता या समानता है । प्रत्येक चिदणु ब्रह्मांड का जीवित अंग है। ब्रह्मांड में जो कुछ होता है इन चीजों में प्रतिबिंबित होता रहता है यही कारण है कि विश्व में अद्भुत व्यवस्था एवं सामंजस्य है ।आत्मा-चिदणुओं और शरीर-चिदणुओं में ईश्वर द्वारा ऐसी व्यवस्था कर दी गई है की आत्मा में होने वाले परिवर्तन सहज ही शरीर में होने लगते हैं ।लाइबनितज़ ने आत्मा और शरीर के बीच संबंध की व्याख्या सहज ढंग से कर लेते हैं।डेकार्ट की क्रिया-प्रतिक्रियावाद तथा स्पिनोजा के समानांतरवाद से भिन्न लाइबनितज़ ने पूर्व- स्थापित सामंजस्य के आधार पर आत्मा और शरीर के बीच संबंध स्थापित कियाहै।

दूसरा उदाहरण दो घड़ियों का है आत्मा और शरीर दो घड़ियों के समान संगति बनाए रखता है ,ऐसा क्यों होता है ? देकार्त के अनुसार यह घड़ियां एक यंत्र से जुड़ी हुई है जिसके चलते यह एक ही चलती हैं एक की क्रिया से दूसरे में प्रतिक्रिया होती है। स्पिनोजा के अनुसार यह एक ही घड़ी की दो छायाएँ हैं इसलिए समान समय बताती हैं। लाइबनितज़ ने यह माना है कि ईश्वर इतना कुशल है कि सृष्टि के समय इन घड़ियों को ऐसा बनाया है कि सदा एक समय बताती रहे। आत्मा- रूपी चिदणु शरीर-रूपी चिदणुओं का सदैव मार्गदर्शन करते रहते हैं। सृष्टि के समय ही ईश्वर ने इसकी व्यवस्था कर दी है।

लाइबनितज़ ने पूर्व-स्थापित सामंजस्य नियम के द्वारा दार्शनिक जगत के देहात्मवाद की समस्या को सुलझाने का प्रयास किया।देकार्ते ने कहा कि मन और शरीर में क्रिया-प्रतिक्रिया होती है जिसके फलस्वरूप मन या आत्मा शरीर को और शरीर आत्मा को प्रभावित करती है।स्पिनोजा ने देकार्ते के क्रिया-प्रतिक्रियावाद को नकारते हुए कहा कि शरीर(जड़)और आत्मा(चेतन)ईश्वर की दो अलग-अलग अभिव्यक्तियाँ हैं।स्पिनोजा ने इस तरह जड़ और चेतन को नदी की दो पाटों की भाँति समानान्तर स्वीकार करते हुए समानान्तरवाद (Parallelism) की स्थापना की।लाइबनितज़ ने इन दोनों से हटकर जड़ और चेतन(शरीर और आत्मा) के सम्बन्ध के पीछे ईश्वर की सत्ता को स्वीकार किया है,जिसने चिदणुओं के निर्माण से पूर्व ही स्थापित नियमों में बांध दिया।

पूर्व-स्थापित सामंजस्य नियम के विरुद्ध कुछ आक्षेप भी किये गए हैं, जो निम्न हैं : -

लाइबनितज़ पूर्वा-स्थापित सामंजस्यवाद की पुष्टि के लिए एकता संगीत और दो घड़ियों का सहारा लिया है। एकता संगीत के माध्यम से उन्होंने विश्व की व्यवस्था की व्याख्या करनी चाही है और दो घड़ियों की उपमा के आधार पर आत्मा और शरीर के बीच संबंध स्थापित करने का प्रयास किया है। यह दोनों उदाहरण केवल उपमायें हैं इनके आधार पर विश्व की व्यवस्था और आत्मा और शरीर के बीच संबंध की व्याख्या नहीं हो सकती, उपमा और व्याख्या में फर्क होता है।

लाइबनितज़ चिदणुओं को विकासशील या विकास की प्रक्रिया में क्रियाशील

बतलाते हैं। दूसरी ओर चिदणुओंका स्वभाव ईश्वर द्वारा पूर्व निर्धारित मानते हैं। यदि इनका स्वभाव पहले से ही निर्धारित है तो फिर इनमें विकास की कल्पना निरर्थक है ।